बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने के आन्तरिक प्रमाण

सदियों से, स्पष्ट मन वाले लोग और बाइबल के ईश्वरीय मूल की ओर इशारा करते इसमें पाए जाने वाले प्रमाणों को बाइबल में विश्वास करने के समर्थन के दो बड़े स्तम्भ मानते हैं: हिजकिय्याह की सुरंग की खोज[1] जैसे बाइबल के बाहर मिलने वाले प्रमाण। इस पाठ में केवल आन्तरिक प्रमाणों अर्थात (1) स्वर्गीय लेखक की ओर इशारा करती बाइबल की सामान्य विशेषताओं, (2) आने वाले मसीह की प्राचीन भविष्यवाणियों का प्रभाव, (3) यीशु कैसा व्यक्ति था, और (4) अविश्वासियों की सोच पर बाइबल के प्रभाव पर ही विचार किया जाएगा।

''एक ही तो है!''

किसी मित्र द्वारा यह पूछे जाने पर कि वह कौन सी पुस्तक पढ़ना पसन्द करेगा, बीस हज़ार पुस्तकों वाले कमरे में मृत्यु शय्या पर लेटा स्कॉटलैण्ड का कवि और नावलकार सर वाल्टर स्कॉट हैरान हो गया। ''पूछने की क्या जरूरत है? एक ही तो पुस्तक है!''[2]

बाइबल के कई विलक्षण गुण इसके परमेश्वर की ओर से होने का संकेत देते हैं: बाइबल का एक चौंकाने वाला गुण, अनेकता में अद्‌भुत एकता है। सादगी को गहराई से जोड़ने वाली बाइबल के बराबर कोई और पुस्तक नहीं है। इसमें परमेश्वर का वचन इतनी निष्पक्षता, संक्षिप्तता और संयम से प्रस्तुत किया गया है कि इसकी किसी के साथ तुलना नहीं हो सकती। यही वह एकमात्र सम्पूर्ण पुस्तक है जिसे बार-बार सुधारने या आधुनिक बनाने की आवश्यकता नहीं है।

बहुत सी पुस्तकें मनुष्य की साहित्यिक विशिष्टता की सर्वोच्चतम रचनाएं हैं, परन्तु जब कभी सबसे उत्तम की बात होती है तो उनमें से ''केवल एक ही'' पुस्तक का नाम आता है।

परमेश्वर का वचन किसी भी दूसरी पुरातन रचना से श्रेष्ठ है। तुलनात्मक रूप से आज के दिन तक बहुत ही कम पुरातन रचनाएं हैं, परन्तु पवित्र बाइबल की हमारे पास बहुत सी प्रतियां हैं।

पृष्ठ 45 से आरम्भ होने वाले पाठ "बाइबल की विशेषताएं" में बाइबल के इन गुणों पर गहराई से चर्चा की जाएगी।

"क्या तू भविष्यवक्ताओं की प्रतीति करता है"

यह कहते समय कि "राजा भी जिस के साम्हने मैं निडर होकर बोल रहा हूं, ये बातें जानता है, और मुझे प्रतीति है, कि इन बातों में कोई उससे छिपी नहीं" (प्रेरितों 26:27) पौलुस साफ़ जानता था कि वह एक ऐसे राजा के सामने खड़ा था जो पुराने नियम को गम्भीरता से लेता था। हम यह तो नहीं जानते कि राजा अग्रिप्पा ने आने वाले मसीह के विषय में पुराने नियम की भविष्यवाणियों का कितना अध्ययन किया था, परन्तु वह स्वयं आंशिक यहूदी था।[3] यहूदी हो या अन्यजाति, जो भी पुराने नियम जो यीशु के आने से बहुत पहले लिखा गया था, को पढ़ता था वह यह देखकर कि भविष्यवक्ताओं ने मसीह के बारे में क्या कहा था उन पर विश्वास किए बिना नहीं रह सकता था।

भविष्यवाणी का प्रमुख उद्देश्य यीशु के विषय में गवाही देना था (प्रकाशितवाक्य 19:10ग)। भविष्यवक्ता उसी की गवाही देते थे (प्रेरितों 10:43)। स्त्री का वंश शैतान का सिर कुचलेगा (उत्पत्ति 3:15; गलतियों 4:4; इब्रानियों 2:12–14)। वह इब्राहीम के वंश से (उत्पत्ति 18:18; गलतियों 3:16), यहूदा के गोत्र से (उत्पत्ति 49:10) और दाऊद के घराने से होगा (भजन 89:3, 4)। उसका जन्म एक कुंवारी से (यशायाह 7:14) बैतलहेम में होगा (मीका 5:2)। उससे पहले उसका मार्ग तैयार करने वाला आएगा (यशायाह 40:3)। गलील में उसकी सेवकाई की भविष्यवाणी की गई थी (यशायाह 9:1, 2)। उसकी ईश्वरीय बुद्धि (यशायाह 11:1–3) और उसके सामर्थ के कामों की तस्वीर दिखाई गई थी (यशायाह 35:5)। अपने पिता के घर की धुन में उसके जलने की भविष्यवाणी भी की गई थी (भजन 69:9; यूहन्ना 2:16, 17)।

उसके एक दुखी पुरुष, शोक का ज्ञाता और पाप उठाने वाला होने के चौंकाने वाले तथ्यों की बाद के वर्षों की रूपरेखा दी गई थी (यशायाह 53:3, 11)। उस पर कोड़े मारे जाएंगे, परन्तु वह विरोध नहीं करेगा (यशायाह 53:5, 7)। उसके ठुकराए जाने (यशायाह 53:3) और चेलों की कायरता की भविष्यवाणी की गई थी (जकर्याह 13:7)। उनमें से एक ने चांदी के तीस सिक्कों के लिए (जकर्याह 11:12) उसे पकड़वाना था (भजन 41:9)। घूस दिए जाने से बहुत पहले, लहू का धन खर्च होने की भविष्यवाणी हो गई थी (जकर्याह 11:13)। उसके मुंह पर थूका जाना (यशायाह 50:6) और अपराधियों में गिना जाना (यशायाह 53:12) भविष्यवाणी का पूरा होना ही था। उससे न केवल घृणापूर्वक शब्दों से (भजन 22:7, 8), बल्कि सिरके के साथ भी ठट्ठा किया जाएगा (भजन 69:21)। चिट्ठियां डालकर, उसके कपड़े आपस में बांट लिए गए थे (भजन 22:18)। उसके हाथ

और पांव बेधे जाने थे (भजन 22:16ग), परन्तु उसकी कोई हड्डी नहीं टूटनी थी (भजन 34:20)। क्रूस पर चढ़ने वाला उसे क्रूस पर चढ़ाने वालों के लिए प्रार्थना करेगा (यशायाह 53:12)। एक धनी की कब्र में उसे रखा जाएगा (यशायाह 53:9), पर उसकी देह सड़ेगी नहीं (भजन 16:10)। वह स्वर्ग में ऊपर उठा लिया जाएगा (भजन 45:6; 110:1-3)।

कैनन लिड्न ने पुराने नियम में मसीह के बारे में 332 भविष्यवाणियां गिनीं।[4] एलफ्रेड ऐड्रशेम ने मसीह और उसके राज्य की बात करने वाले 456 पदों की सूची बनाई।[5] ये सब बातें एक ही व्यक्ति में संयोग से कैसे पूरी हो सकती थीं? इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि यीशु ने दावा किया था, "यदि कोई [परमेश्वर की] इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा" (यूहन्ना 7:17क)। नास्तिक होने का कोई बहाना नहीं चल सकता।

बाइबल की विलक्षणता इस बात में देखी जाती है कि धर्म (जैसे इस्लाम, बुद्ध, कन्फ्यूशियस मत, शिन्तोईवाद [जापान के राज धर्म], और ज़रतुश्त मत) से सम्बन्ध रखने वाले दूसरी पुस्तकें भविष्य की बात बताने का कोई प्रयास नहीं करतीं। बाइबल ने अपनी भविष्यवाणियों के द्वारा इसे सही या गलत प्रमाणित करने के अवसर उपलब्ध करवा दिए हैं, जिनका धर्म की दूसरी पुस्तकें साहस नहीं कर पातीं।

स्वयं-भू भविष्यवक्ताओं की तुलना बाइबल के भविष्यवक्ताओं से किए जाने पर, हम परेशान हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, बरतानवी राजनेता जॉर्ज कैनिंग (1770-1827) ने भविष्यवाणी की थी कि दक्षिणी अमेरिकी कॉलोनियां संयुक्त राज्य की तरह ही विकसित होंगी। बरतानवी प्रधानमन्त्री दिसरायली (1804-1881) ने भविष्यवाणी की थी कि दक्षिणी राज्यसंघ एक स्वतन्त्र राष्ट्र बन जाएगा। रॉबर्ट इंगरसॉल (1833-1899) ने भविष्यवाणी की थी कि दस वर्षों के भीतर प्रत्येक कलीसिया के स्थान पर दो रंगमंच होंगे। एक इटेलियन गणितज्ञ जिरोम कार्डन (1501-1576) ने अपनी ही मृत्यु के दिन तथा घड़ी की भविष्यवाणी की थी और उसने सही समय पर आत्महत्या कर ली थी।

"परम सुन्दर"

बाइबल के ईश्वरीय मूल से होने के सर्वोत्तम आन्तरिक प्रमाणों में से एक यीशु का चरित्र है। शायद ही कोई अपवाद हो, जिसमें यीशु के व्यक्तित्व की प्रशंसा के लिए विश्वासी तथा अविश्वासी एकमत न हों। एक अविश्वासी दार्शनिक जोसेफ रेनान (1823-1892) ने लिखा है, "हर युग यह ऐलान करेगा कि, मनुष्यों के पुत्रों में, यीशु से बड़ा कोई पैदा ही नहीं हुआ।" यीशु सब से अलग है, वह शारोन देश का गुलाब, तराइयों का सोसन फूल, दस हज़ार में उत्तम, परम सुन्दर,[6] परमेश्वर का वह वचन है जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता!

सिद्ध होने पर भी, यीशु अपनी दृष्टि में धर्मी बनने से कोसों दूर था। वह विनम्र व दीन था। उसने अपने आपको सांसारिक माता-पिता के अधीन रखा था। अपनी इच्छाओं को

भूलकर उसे आत्माएं बचाने की और जरूरमंदों की सहायता की धुन थी चाहे वे घृणित सामरी ही क्यों न हों। उसने पृथ्वी पर कोई अधिकार तो नहीं चाहा, परन्तु उसने यरूशलेम के मन्दिर की पवित्रता का सम्मान न करने वालों को पूरी शक्ति से निकाल दिया था। प्रेम और सेवा के सम्पूर्ण उदाहरण, यीशु ने दूसरों के लिए अपने आपका इन्कार किया। उसके परमेश्वर होने का इन्कार करने वाला उसकी भलाई को स्वीकार नहीं कर सकता।

कोई मानवीय जीव यीशु जैसा व्यक्ति होने की कल्पना नहीं कर सकता। यदि सुसमाचार के लेखकों ने उसकी कहानियां बनाई हों, तो फिर उन्होंने उससे भी बड़ा आश्चर्यकर्म किया जिसका श्रेय वे यीशु को देते हैं, क्योंकि मनुष्य होकर भी उन्होंने एक सिद्ध व्यक्ति की रचना कर डाली और नैतिकता की एक सम्पूर्ण पद्धति अपना ली।

एक विद्वान ने कहा है कि प्रेरित न तो इतने अच्छे थे और न ही इतने महान कि वे यीशु जैसे किसी व्यक्ति का आविष्कार कर सकते। राज्य के बारे में उनके विचार सांसारिक थे (मरकुस 10:35–45); उन्हें फरीसियों के ''खमीर'' की समझ नहीं थी (मत्ती 16:5–12); वे अपना इन्कार करने की बात को नहीं समझ पाए थे (मत्ती 16:21–26); उनमें चरित्रबल की कमी थी (मत्ती 26:31–35, 51–56, 69–75); और दूसरी जातियों के विरुद्ध उनकी अपनी पूर्वधारणा थी (लूका 9:51–56)।

''मैंने प्रतीति न की''

''जब तक मैंने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा, तब तक मैंने उन बातों की प्रतीति न की,'' यही कहा था शीबा की रानी ने सुलैमान से (1 राजा 10:7क; 2 इतिहास 9:6क)। इसी प्रकार, संदेह करने वाले और बहुत से अविश्वासियों ने बाइबल को तब तक नहीं माना जब तक उन्होंने मसीह के प्रमाण की जांच न कर ली। जांच करने पर , उन्होंने पाया कि लोगों के जीवनों में जो कुछ मसीह कर सकता है उसके विषय में उन्हें ''आधा'' ही बताया गया था।

सर जॉर्ज लिटलटन (1709–1773) ने इंग्लैण्ड में इटन और ऑक्सफोर्ड में शिक्षा पाई थी और संसद में प्रवेश करके राजस्व विभाग में बड़े-बड़े ओहदों पर काम किया था। इस विद्वान की जीवनी डॉक्टर सैमुएल जॉनसन ने लिखी थी। 18वीं शताब्दी के बहुत से विद्वान लोगों की तरह, लिटलटन और उसके मित्र गिलबर्ट वैस्ट ने हेनरी सेन्ट जॉन बोलिंगब्रोक, फिलिप चैस्टरफील्ड, अलैक्ज़ेन्डर पोप और दूसरे नास्तिकों के प्रभाव में आकर मसीही धर्म ठुकरा दिया था। पूरी तरह से बाइबल को एक छल मान चुके लिटलटन और वैस्ट ने ''धोखेबाज़'' यीशु मसीह का भण्डाफोड़ करने का मन बना लिया था।

लिटलटन ने पौलुस के मन परिवर्तन और वैस्ट ने मसीह के पुनरुत्थान की आलोचना का विषय चुना। प्रारम्भ में दोनों ही पूर्वधारणा से भरे हुए थे, परन्तु मसीहियत को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए उनके अलग-अलग अध्ययनों और प्रयासों के फलस्वरूप वे परमेश्वर और उसके वचन के विश्वासी बन गए थे। अपना-अपना अध्ययन पूरा करने के बाद वे इकट्ठे हुए, किसी धोखेबाज़ी के अनावृत्त होने की खुशी मनाने के लिए नहीं बल्कि अपनी पिछली

मूर्खता का विलाप करने और जो कुछ उन्होंने पाया था, उसकी खुशी में आनन्दित होने के लिए।

वैस्ट ने "मसीह के पुनरुत्थान पर निरीक्षण" और लिटलटन ने "संत पौलुस के मन परिवर्तन पर निरीक्षण कर निबन्ध लिखा।" लिटलटन के खोज पत्र वैस्ट के नाम एक पत्र के रूप में पहले छपे। उसकी पहली पंक्ति में लिखा था, "[पौलुस का] मन परिवर्तन अपने आप में ही यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त प्रदर्शन था कि मसीहियत एक ईश्वरीय प्रकाशन है।"[7]

लिटलटन ने पौलुस के कथित मनपरिवर्तन के सम्बन्ध में एक खोजपूर्ण जांच की।[8] उसने यह निष्कर्ष निकाला कि चार बातें सम्भव हो सकती हैं: (1) पौलुस ने दमिश्क के मार्ग में मिलने वाले दर्शन को कपटपूर्वक ढंग से बदल दिया; (2) वह इतने उत्साह से भर गया था, कि उसे दर्शन मिलने की गलती लगी; (3) मसीही लोगों ने उसे धोखा दिया; या (4) उसने सच बताया था।

पहली बात एकदम नकार दी जाती है। पौलुस को ऐसी घटना को कपटपूर्वक बताने की क्या आवश्यकता थी, जिससे उसके अपने जीवन की दिशा ही बदल जाए और उस झूठ के लिए उसे मरना पड़े? धोखेबाज़ लोग धन, शक्ति, कामेच्छा, यश आदि पाने के उद्देश्य से झूठ बोलते हैं। पौलुस का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं लगता, इसलिए तर्क पहली बात को नकारने पर बाध्य करता है।

दूसरी सम्भावना पौलुस द्वारा देखे दर्शन की गलतफहमी है। परन्तु, पौलुस स्वर्ग के किसी काल्पनिक दर्शन को देखने के बिल्कुल विरुद्ध था। उसने पूरा ज़ोर यीशु को एक धोखेबाज़ प्रमाणित करने पर लगाया हुआ था। किसी गुमराह उन्मादी व्यक्ति का अपने भ्रम के प्रति मनोवैज्ञानिक रूप से झुकाव होना आवश्यक है। परन्तु पौलुस का झुकाव इसके विपरीत था। खोज न करने वाली भावुकता के बजाय उसने अपना पूरा जीवन तर्क, विचारशीलता और सावधानीपूर्वक विश्लेषण पर लगाया हुआ था। इस प्रकार दूसरी बात जिसका लिटलटन ने तर्क दिया था, वैसे ही अविश्वसनीय हो जाती है। 1 कुरिन्थियों 13:1–13 के सम्बन्ध में, जहां आश्चर्यकर्मों के पहले पौलुस ने परोपकार को रखा, लिटलटन ने लिखा, "क्या यह जोश की भाषा है? ... निश्चय ही इस पद्य में न तो क्रोध और न ही धर्मान्धता के धोखे में किसी व्यक्ति के होने की बात मिलती है।"[9]

तीसरी बात के सम्बन्ध में, यदि मसीही लोग धोखा भी दे रहे थे, तो पौलुस ने उन पर विश्वास नहीं करना था। वह मसीहियों की हत्या करवा रहा था, और उसने उनकी नहीं सुननी थी। फिर तो, तीसरी बात भी बड़ी कमज़ोर सी लगती है।

दूसरे सम्भावित विकल्पों के निष्कासन के बाद, लिटलटन यह मान गया था कि पौलुस ने वास्तव में यीशु का चमत्कारी दर्शन पाया था। पौलुस के वृत्तांत की सच्चाई ही पौलुस के कठोर मन की तर्कपूर्ण व्याख्या है जिसने यीशु को सताना छोड़कर यीशु के लिए बलिदान होने की ओर रुख कर लिया था।

लिटलटन का लेख इतना कायल करने वाला था कि डॉक्टर सैमुएल जॉनसन ने

टिप्पणी की कि यह ऐसा निबन्ध था जिसके उत्तर की नास्तिक लोग कभी कल्पना भी नहीं कर पाए थे। डॉक्टर फिलिप डौडरिज ने, जो लिटलटन का निकट मित्र बन गया था, ने उस लेख को ''दक्षतापूर्ण'' और ''हमारी पीढ़ी द्वारा बनाया अपने प्रकार का एक सम्पूर्ण'' लेख कहा है।

सारांश

बाइबल के भीतर ही यह प्रमाण है कि यह परमेश्वर की ओर से दी गई है। पुराने नियम की आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां और यीशु के सम्पूर्ण जीवन के साथ, यीशु में उनका पूरा होना, पवित्र शास्त्र के ईश्वरीय चरित्र की ओर संकेत करता है। यह हर मनुष्य के ऊपर निर्भर है कि वह बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ वचन माने।

पाद टिप्पणियां

[1]सिलोआम सुरंग का निर्माण हिजकिय्याह द्वारा यरूशलेम पर अश्शूरियों के आक्रमण के समय शहर में पानी लाने के लिए करवाया गया था। सन 1880 में सुरंग में मिले एक शिलालेख से इसके अनुमानित समय को हिजकिय्याह के शासन के समय होने का समर्थन मिलता है (लगभग 716–687 ई.पू.)। सुरंग स्वयं 2 राजा 20:20 में वर्णित घटनाओं की पुष्टि करती है (मेरिल सी. टैनी, सं., *द ज़ौंडर्वन पिक्टोरियल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ द बाइबल* [ग्रैंड रैपिड्स मिशि.: ज़ौंडर्वन पब्लिशिंग हाऊस, 1975], s.v. ''हिज़किय्याह'' एण्ड ''सिलोआम।'') [2]टी. हैरीसन, *थ्री हंड्रड टैस्टीमनीज़ इन फेवर ऑफ़ रिलिजन एण्ड द बाइबल बाय डिस्टिंग्युश्ड मेन एण्ड वूमेन* (सिंसिनट्टी: रॉबर्ट क्लार्क एण्ड कं., 1888), 340. [3]प्रेरितों 24:24 में अग्रिप्पा की बहन द्रुसिल्ला को एक यहूदिन कहा गया है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के हिन्दी संस्करण में ''प्रेरितों के काम, भाग–3'' के पृष्ठ 180 पर हेरोदेस के घराने को दर्शाता एक चार्ट है। [4]फ्लॉयड ई. हैमिल्टन, *द बेसिस ऑफ़ द क्रिश्चियन फ़ेथ,* 3d. ed. (न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1946), 156–57. [5]अलफ्रेड एडरशेम, *लाइफ एण्ड टाइम ऑफ़ जीज़स द मसायाह* (न्यू यार्क: लौंगमैन्स, ग्रीन, एण्ड कं., 1900), 2:710–41. [6]श्रेष्ठगीत 2:1 और 5:10, 16 से लिए गए ये वाक्यांश, कई प्रसिद्ध भजनों में यीशु पर लागू किए जा चुके हैं। [7]जॉर्ज लिटलटन, जेम्स डी. बेल्स में ''लार्ड लिटलटन ऑन द कन्वर्शन ऑफ़ सेंट पॉल,'' *साऊल: फ्रॉम परसिक्यूटर टू परसिक्यूटड* (शरेवपोर्ट, ला. लैम्बर्ट बुक हाउस, 1975), 106. [8]पौलुस के मनपरिवर्तन के वर्णन प्रेरितों 9; 22; और 26 में मिलते हैं। [9]लिटलटन, 129.